Year-68, Volume-1 Jan.-March. 2015
RNI No. 10591/62 ISSN 0974-8768

अनेकान्त

(जैनविद्या एवं प्राकृत भाषाओं की त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ANEKANT

(A Quarterly Research Journal for Jainology & Prakrit Languages)

सम्पादक
डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

Editor
Dr. Jaikumar Jain, Muzaffarnagar (U.P.)
Mobile : 09760002389

वीर सेवा मन्दिर, नई दिल्ली-110 002
Vir Sewa Mandir, New Delhi-110 002

विषयानुक्रमणिका

विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
विशेष संपादकीय	पं. निहालचंद जैन	5-8
1. आत्मख्याति टीका में प्रयुक्त क्रमनियमित विशेषण का अभिप्रेतार्थ	अनिल अग्रवाल	9-19
2. आचार्य हरिभद्र का अनेकांतवाद और उपयोगिता	अतुलकुमार प्रसाद सिंह	20-28
3. जैनदर्शन में विवेचित विग्रहगति की अन्य दर्शनों से तुलना	प्रा. डॉ. शीतलचंद जैन	29-36
4. चामुण्डराय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. आनन्दकुमार जैन	37-45
5. आचार्य देवसेन की कृतियों में दार्शनिक दृष्टि	डॉ. आलोक कु. जैन	46-54
6. जैन वाङ्.मय में अवधिज्ञान	पवन कुमार जैन	55-68
7. अहिंसा संबंधी व्यावहारिक समस्याएँ, समाधान.....	डॉ. वंदना मेहता	69-76
8. Social Implications of Meditation	Dr. Samani Shashi Prajna	77-82
9. धार्मिक जीवन और स्वास्थ्य	आचार्य राजकुमार जैन	83-91
10. रूस में जैन पाण्डुलिपियाँ	ललित जैन	92-94
11. पुस्तक समीक्षा		95
12. पाठकों के पत्र		96

अहिंसा सम्बन्धी व्यावहारिक समस्याएँ, समाधान तथा उपलब्धियाँ (जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में)

- डॉ. वंदना मेहता

'अहिंसा' निषेधात्मक शब्द है। जैनधर्म में इसके समान समता, सर्वभूतदया, संयम जैसे अनेक शब्द अहिंसक आचरण के लिए प्रयुक्त हैं। वास्तव में जहाँ भी राग-द्वेषमयी प्रवृत्ति दिखलायी पड़ेगी, वहीं हिंसा किसी न किसी रूप में उपस्थित हो जायेगी। सन्देह, अविश्वास, विरोध, क्रूरता और घृणा का परिहार प्रेम, उदारता, और सहानुभूति के बिना संभव नहीं है। प्रकृति और मानव दोनों की क्रूरताओं का निराकरण संयम द्वारा ही संभव है। इसी कारण, जैनाचार्यों ने तीर्थ का विवेचन करते हुए कषायरहित निर्मल संयम की प्रवृत्ति को ही धर्म कहा है। यह संयम रूप अहिंसा धर्म वैयक्तिक और सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में समता और शान्ति स्थापित कर सकता है। इस धर्म का आचरण करने पर स्वार्थ, विद्वेष, सन्देह और अविश्वास को कहीं भी स्थान नहीं है। व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों का परिष्कार भी संयम या अहिंसक प्रवृत्तियों द्वारा सम्भव है।

अहिंसा सम्बन्धी समस्याएँ और समाधान :

अहिंसा के विषय में जिज्ञासुओं की ओर से जहाँ अनेक व्यर्थ के प्रश्न उठाये गये वहाँ एक आवश्यक और जीवन्त प्रश्न यह भी है कि जैनधर्म के अनुसार यह संसार अनेक छोटे-छोटे जीव-जंतुओं से पूरा भरा हुआ है। दैनिक जीवन से सम्बन्धित कोई भी ऐसी क्रिया नहीं है जिसमें हिंसा न होती हो।[1] चलने-फिरने, खाने-पीने एवं बोलने आदि साधारण क्रियाओं में भी जीवों का घात होता है। इस स्थिति में अहिंसा की साधना कैसे पूरी होगी? क्या हम निष्क्रिय होकर बैठ जाए? गृहस्थ जीवन अनेक परिग्रहों से युक्त है, जिसमें बहुत से आरम्भ करने पड़ते हैं। अतः अहिंसा की रक्षा वहाँ कैसे सम्भव है?

जैनाचार्य संसार से विरत अवश्य थे, किन्तु उन्होंने सामान्य जीवन